Peer Reviewed,Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VII, Issue-IV
October - December - 2018
Marathi / Hindi Part - II

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

PRINCIPAL
SAU. RAJANITAI NANASAHEB DESHMUKH
ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE,
BHADGAON DIST. JALGAON (424105)

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	राग : एक अध्ययन **डॉ. अश्विनीकुमार सिंह**	१-४
२	आध्यात्मिक जीवन रेकी पद्धति के माध्यम से **डॉ. जयश्री बंसल**	५-९
३	शास्त्रीय संगीत में नवसंजीवनी स्वरूप इलेक्ट्रोनिक एवं संचार माध्यमों की भूमिका **सहा. प्रा. सुनिल बाबुलालजी पटके**	१०-१४
४	एक पृथक संवैधानिक राज्य के रूप में हिमाचल का गौरवमय संघर्ष **सुमित हुड्डा**	१५-१७
५	बाजारवाद एवं वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष में 'दौड़' उपन्यास **प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील**	१८-२१
६	भारत गौरव के पुनः निर्माण में शिक्षकों की भूमिका : एक अध्ययन **अर्पित सुमन टोप्पो**	२२-२६
७	कनुप्रिया में प्रेम **प्रा. डॉ. महेंद्रकुमार वाढे**	२७-३१
८	शैलेश मटियानी कृत 'हत्यारे' कहानी संग्रह में व्यक्त सामाजिक एवम राजनीतिक चिंतन **डॉ. संजय ढोडरे**	३२-३५
९	व्यायाम का सेहत और तंदुरुस्ती पर होणेवाला परिनाम, एक दृष्टिकोण **डॉ.कालीदास पुंडलिक तादलापूरकर** **डॉ.मुरलीधर शंकरराव राठोड**	३६-४१
१०	प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन **प्राचार्य डॉ. नाना नामदेव गायकवाड**	४२-४७
११	स्वतंत्रता आंदोलन की वेदी पर भारतीय कवियों का योगदान **डॉ. लक्ष्मी गुप्ता**	४८-५२
१२	उत्तरशती के हिंदी उपन्यासों में काम-काजी नारी की समस्या **प्रा. डॉ. शेख मुखत्यार**	५३-५६

PRINCIPAL
SAU. RAJANITA NANASAHEB DESHMUKH
ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE
BHADGAON DIST. JALGAON (424105)

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

१०. प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन

प्राचार्य डॉ. नाना नामदेव गायकवाड
सौ. रजनीताई नानासाहेब देशमुख, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, भडगाव, जि. जलगाँव.

प्रेमचंद हिन्दी कथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है। उनका गुणात्मक, संख्यात्मक कालजयी साहित्य देखकर समीक्षकों ने, साहित्य इतिहासकारों ने कहानी, उपन्यास विधा के विकासात्मक सन १९१६ से १९३६ तक का समय को 'प्रेमचंद युग' नाम से अभिहित कर 'प्रेमचंद' को गौरवान्वित किया है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहकर संबोधित किया था।[१]

प्रेमचंद आदर्शोन्मुख यथार्थवादी साहित्यकार थे। उन्होंने यथार्थवादी परम्परा की नींव रखकर भारतीय साहित्यकारों को साहित्य में 'आम आदमी' के सुख-दुःख के अभिव्यक्ति के लिए दिशानिर्देशन किया। वे सम्पादक, अनुवादक, संवेदनशील लेखक, सचेत नागरिक, कुशल वक्ता तथा सुधी विद्वान आदि बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। हिन्दी साहित्यकार ही नहीं बल्कि उर्दू, पंजाबी आदि अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों ने भी प्रेमचंद साहित्य से प्रेरणा प्राप्त की। आम आदमी को सर्जनात्मक लेखन का एक पृष्ठ लिखना उसके लिए दुरूह है तो प्रेमचंद ने अपने जीवन में लाखों पृष्ठ लिखे यह आश्चर्य की बात है। कितनी मेहनत, धैर्यता का यह कार्य कोई युगप्रवर्तक ही कर सकता है। अविकसित तंत्रज्ञान, आर्थिक समस्या, गरिबी, अंग्रेजी शासन जैसे प्रतिकुल परिस्थितियों में इतना साहित्य लिखना निश्चित ही ऐसी प्रतिभा को ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त होगा।

प्रेमचंद के साहित्य के केन्द्र में किसान, अस्पृश्य, शोषित नारी तथा आम आदमी है उन्होंने कुल १५ उपन्यास, ३०० से कुछ कहानियाँ, २ नाटक, १० अनुवाद, ७ बालपुस्तकें तथा हजारों पृष्ठ के लेख सम्पादकीय भाषण, भूमिका पत्र, संपादनकार्य आदि सृजन कार्य किया। उनके सेवासदन (१९१८), प्रेमाश्रम (१९२२), रंगभूमि (१९२४), कायाकल्प (१९२७), गबन (१९२८), कर्मभूमि (१९३२), गोदान (१९३६), मंगलसूत्र (अपूर्ण) आदि उपन्यास कालजयी हैं।

प्रेमचंद हिन्दी और उर्दू भाषिक साजा संस्कृति के प्रतिनिधि लेखक थे। उन्होंने हिन्दी और उर्दू में लिखा। फलतः उनके साहित्य में 'सर्वधर्मसमभाव' मूल्य द्रष्टव्य है। प्रारंभ में 'पंच परमेश्वर', 'बडे घर की बेटी', 'मंत्र', जैसी कहानियों तथा 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम' आदि उपन्यासों में प्रेमचंद सुधारवादी, आदर्शवादी थे लेकिन गबन से गोदान तक आते आते वह यथार्थवादी बनें। प्रेमचंद ने अपने युगीन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक समस्याओं को अपने उपन्यास, कहानियों में चित्रित किया है।

PRINCIPAL
SAU. RAJANITAI NANASAHEB DESHMUKH
ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE
BHADGAON DIST. JALGAON (424109)